हठ कर बैठ्यो जाट सांवरा | By Sanjay Mittal |

ॐ गजाननं भूतगणादि सेवितम्
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमा सुतं शोक विनाश कारकम्
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्॥

हठ कर बैठ्यो जाट,
सांवरा तन्ने आनो से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

तन्ने मेवा मिसरी भावे,
माखन पे लार टपकावे।
जे रोटी राबड़ी खातिर,
हरी मिर्ची देख घबरावे।
खाती मीठी छाछ श्याम,
तन्ने पी जानी से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

मैं मोटी बुद्धि वालो,
कई मोटा रोटी बनायो।
बस एक रोटी तू खा ले,
फिर रहसी धायो धायो।
नखरा श्याम दिखावे मत ना,
पप्पू स्यानो से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

जब तक ना श्याम जिमाऊं,
खेत पर कहीं ना जाऊं।
मैं कई दिना को भूखो,
श्री श्याम नाम ही गाऊं।
बड्या घनेरा काम,
श्याम खेती पर जानो से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

या देख जाट की भक्ति,
सांवरिया दौड्यो आयो।
झट रोटी राबड़ी जिम्यो,
और जाट ने बैठ जिमायो।
कहे रमेश भक्त को मोहन,
मीत पुरानो से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

हठ कर बैठ्यो जाट,

सांवरा तन्ने आनो से।
घार्या राबड़ी रोटी श्याम,
तन्ने भोग लगानो से॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b9%e0%a4%a0-%e0%a4%95%e0%a4%b0-%e0%a4%ac%e0%a5%88%e0%a4%a0%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a5%8b-%e0%a4%9c%e0%a4%be%e0%a4%9f-%e0%a4%b8%e0%a4%be%e0%a4%82%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a4%be-by-sanjay-mittal/